

"जब मन स्थिर होता है।
तब हर समस्या का समाधान
स्पष्ट दिखने लगता है... क्योंकि
शांति में ही शक्ति है!
और स्थिरता में ही समाधान !
.....
॥ सुप्रभात ॥

“सच्ची खोज अच्छी खबर”

ज्ञान सरावर



R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377

(हिन्दी साप्ताहिक)

डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ग : 17 अंक : 42

(प्रत्येक गुरुवार)

मुम्बई, 11 दिसम्बर से 17 दिसम्बर, 2025

पृष्ठ : 8

मूल्य : 2.00 रुपये

नेहरू को अपना सिंहासन डोलता नजर आया... लोकसभा में बोले पीएम नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री मोदी ने लोकसभा में 'वंदे मातरम्' की 150वीं वर्षगांठ पर कहा कि जो वंदे मातरम् 1905 में महात्मा गांधी को राष्ट्रगान के रूप में दिखता था... वंदे मातरम् इतना महान था, इसकी भावना इतनी महान थी तो फिर पिछली सदी में इसके साथ इतना बड़ा अन्याय क्यों हुआ? वंदे मातरम् के साथ विश्वासघात क्यों हुआ? वह कौनसी ताकत थी जिसकी इच्छा पूज्य बापू की भावना पर भारी पड़ गई जिसने वंदे मातरम् जैसी पवित्र भावना को विवादों में घसीट दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने लोकसभा में 'वंदे मातरम्' की 150वीं वर्षगांठ पर कहा, "हम देशवासियों को गर्व होना चाहिए कि दुनिया के इतिहास में कहीं पर भी ऐसा कोई काव्य नहीं हो सकता, ऐसा कोई भाव गीत नहीं हो सकता जो सदियों तक एक लक्ष्य के लिए कोटि-कोटि जनों को प्रेरित करता हो... पूरे विश्व को पता होना चाहिए कि गुलामी के कालखंड में भी ऐसे लोग हमारे यहां पैदा होते थे जो इस बीएपीएस संस्था के प्रमुख स्वामी महाराज ने नर में

प्रकार के भावगीत की रचना कर सकते थे, यह विश्व के लिए अजूबा है। प्रधानमंत्री मोदी ने लोकसभा में 'वंदे मातरम्' की 150वीं वर्षगांठ पर कहा कि



बंगाल का विभाजन तो हुआ लेकिन बहुत बड़ा स्वदेशी आंदोलन हुआ और तब वंदे मातरम् हर जगह गूंज रहा था। अंग्रेज समझ गए थे कि बंगाल की धरती से निकला बंकिम बाबू का यह भाव सूत्र जो उन्होंने तैयार किया था उसने अंग्रेजों को हिला दिया था। इस गीत की ताकत इतनी थी कि अंग्रेजों को इस गाने पर प्रतिबंध लगाने पर मजबूर होना पड़ा था। गाने और छापने पर ही नहीं वंदे मातरम् शब्द बोलने पर भी सजा, इतने कठोर कानून लागू

किए थे। प्रधानमंत्री मोदी ने लोकसभा में 'वंदे मातरम्' की 150वीं वर्षगांठ पर कहा, "अंग्रेजों ने बांटों और राज करो, इस रास्ते को चुना और उन्होंने बंगाल को इसकी प्रयोगशाला बनाया क्योंकि वो भी जानते थे कि वो एक वक्त था जब बंगाल का बौद्धिक सामर्थ्य देश को दिशा, ताकत, प्रेरणा देता था और इसलिए अंग्रेज भी जानते थे कि बंगाल का यह जो सामर्थ्य है वो पूरे देश की शक्ति का एक केंद्र बिंदु है और इसलिए अंग्रेजों ने सबसे पहले बंगाल के टुकड़े करने की दिशा में काम किया। अंग्रेजों का मानना था कि एक बार बंगाल टूट गया तो यह देश भी टूट जाएगा... 1905 में अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन किया लेकिन जब अंग्रेजों ने 1905 में यह पाप किया तो वंदे मातरम् चट्टान की तरह खड़ा रहा। बंगाल की एकता के लिए वंदे मातरम् गली-गली का नाद बन गया था और वो ही नारा प्रेरणा देता था।

ओम बिरला ने लोकसभा में कहा: मंत्री सदस्यों से हाथ मिलाते हुए सदन से नहीं जाएं

नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सदन में कुछ सदस्यों के खड़े होकर आपस में बातचीत करने को लेकर आपत्ति जताई और कहा कि सदस्य ऐसा नहीं करें तथा मंत्री भी सदस्यों से हाथ मिलाते हुए सदन से बाहर नहीं जाएं। उन्होंने सदन में प्रश्नकाल खत्म होने के तत्काल बाद उस वक्त यह टिप्पणी की, जब वह कुछ सदस्यों के कार्यस्थगन के नोटिस को अस्वीकार किए जाने का उल्लेख कर रहे थे। बिरला ने कुछ सदस्यों के खड़े होकर बात करने पर आपत्ति जताई। लोकसभा अध्यक्ष ने कहा, "सदस्य खड़े होकर बात नहीं करें। मंत्री गण भी (सदस्यों से) हाथ मिलाते हुए सदन से नहीं जाएं।" बिरला का कहना था, "हमें संसदीय परंपराओं के पालनीय नियमों को कई बार पढ़ना चाहिए। हमेशा प्रयास करना चाहिए कि संसद की गरिमा को बरकरार रखने के लिए इन नियमों का पालन करें।" इस दौरान तृणमूल कांग्रेस के नेता सौगत रॉय ने कुछ टिप्पणी की। इस पर लोकसभा अध्यक्ष ने कहा, "आप बैठिए, आपको नए सदस्यों का मार्गदर्शन करना चाहिए। आप बैठे-बैठे बहुत बोलते हैं।"



वो जिन्ना के चश्मे से वंदे मातरम् को देखते हैं, संसद में बहस के दौरान राजनाथ सिंह का कांग्रेस पर अटैक

नई दिल्ली(संवाद सूत्र)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सोमवार को वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ पर लोकसभा में विशेष चर्चा को संबोधित किया और कहा कि राष्ट्रगान राष्ट्र की धड़कन और दुनिया भर में एक मंत्र बन गया है। लोकसभा में संसद के शीतकालीन सत्र में बोलते हुए, राजनाथ सिंह ने कहा कि 1906 में भारत का पहला झंडा बनाया गया था, और उस झंडे के केंद्र में वंदे मातरम् लिखा गया था, जिसे पहली बार बंगाल में फहराया गया था। अगस्त 1906 में जन जागरूकता बढ़ाने के लिए वंदे मातरम् नामक एक समाचार पत्र भी शुरू किया गया था। यह वह समय था जब वंदे मातरम् केवल एक शब्द नहीं था, यह एक भावना, प्रेरणा का स्रोत और एक कविता थी। राजनाथ ने कहा कि वंदे मातरम् अपने आप में पूर्ण है और इसे अपूर्ण बनाने के कई प्रयास किए गए। वंदे मातरम् को उसका

गौरव लौटाना समय की मांग है। राजनाथ सिंह ने लोकसभा में कहा आज़ादी के बाद वंदे



मातरम् को हाशिए पर रखा गया और उसे वह न्याय नहीं मिला जिसका वह हकदार था। राजनाथ सिंह ने यह भी कहा कि वंदे मातरम् सिर्फ बंगाल तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका इस्तेमाल पूर्व से पश्चिम तक होता था, और सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि भारत के बाहर भी लोग इसका जाप करते थे। रक्षा मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के

नेतृत्व में सभी लोग वंदे मातरम् के 150 साल पूरे होने का जश्न मनाएंगे और इसे वह दर्जा देंगे जिसका यह हकदार है। उन्होंने आगे कहा कि जिन लोगों को अखंड भारत से समस्या थी या जो उससे डरते थे, उन्होंने राष्ट्रगीत के बाकी छंदों पर आपत्ति जताई। मेरा बस यही सवाल है कि कांग्रेस ने ऐसे लोगों का समर्थन क्यों किया?

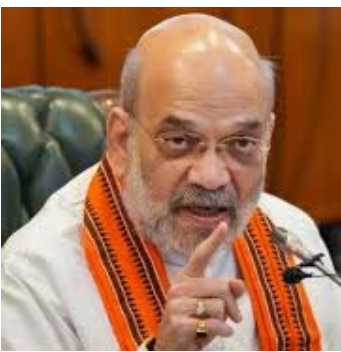
श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती महाराज को दी पुष्पांजलि

लखनऊ। सुशांत गोल्फ सिटी स्थित श्रीश्री राधा रमण बिहारी (इस्कॉन) मंदिर में सोमवार को श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती महाराज के तिरोभाव दिवस पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। अपरिमेय श्याम प्रभु ने बताया कि सरस्वती महाराज ने सात वर्ष की आयु में ही श्रीमद्भागवत गीता के 700 संस्कृत श्लोक कंठस्थ कर लिए थे।

नारायण को देखने का सिद्धांत साकार किया : शाह

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को यहां कहा कि बीएपीएस स्वामीनारायण संस्था के प्रमुख स्वामी महाराज ने भक्ति और सेवा को जोड़ा और नर में नारायण को देखने के वैदिक सिद्धांत को साकार किया। बीएपीएस स्वामीनारायण संस्था द्वारा आयोजित प्रमुख वर्णी अमृत महोत्सव में अपने संबोधन के दौरान शाह ने कहा कि प्रमुखा स्वामी महाराज ने आध्यात्मिकता एवं वैष्णव दर्शन को व्यापक और व्यावहारिक बनाया। शाह ने कहा, "प्रमुख स्वामी महाराज ने भक्ति और सेवा को जोड़ा और नर में नारायण के वैदिक सिद्धांत को

साकार किया। कर्म और करुणा के माध्यम से प्रमुख स्वामी महाराज ने दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने की प्राचीन ऋषि संस्कृति को पुनर्जीवित किया। इसके साथ ही उन्होंने संपूर्ण सनातन धर्म के लिए एक महान कार्य किया। उन्होंने बिना कोई विशिष्ट शिक्षा दिए ही सनातन धर्म के विभिन्न संप्रदायों में संतत्व का सार स्थापित किया।" तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन यहां साबरमती रिवरफ्रंट पर 2025 में प्रमुख स्वामी महाराज की बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम संस्था (बीएपीएस) के अध्यक्ष के रूप में नियुक्ति के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में किया गया है। कार्यक्रम में शाह के अलावा, बीएपीएस प्रमुख महंत स्वामी महाराज और गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल सहित अन्य लोग उपस्थित थे।



वर्तमान वैश्विक युद्ध के दौर में बुद्ध की प्रासंगिकता

मानव सभ्यता की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि वह हर सदी में वही गलती दोहराती है और हर बार वह गलती यह मानकर करती है कि इस बार कुछ नया कर रही है। इन दिनों वैश्विक मंच पर फौली बारूदी गंध और धुआं कोई असामान्य दृश्य नहीं रह गया है। समाचार बुलेटिन अब युद्धों की सूचना नहीं पढ़ते, वे मानो किसी दिनचर्या की तरह बताने लगे हैं कि आज कितने शहर ढहे, कितने लोग बचे और कितने नेता अभी भी शांति के गीत गाते हुए हथियारों के सौदे कर रहे हैं। शांति के नोबल के लिए अपना डेटा बना रहे हैं। महाभारत का युद्ध 18 दिनों में समाप्त हो गया था, कलिंग का युद्ध जिसने सम्राट अशोक को बुद्ध का अनुयायी बना दिया था, वह 262 ईसा पूर्व से 261 ईसा पूर्व की संक्षिप्त अवधि में हुआ, पर आज दुनिया भर में अनेक युद्ध निरंतर चल रहे हैं। आज चीन और ताइवान जो बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं वे भी परस्पर युद्ध के मुहाने पर हैं। ऐसे विविध समय में बुद्ध की छवि धुंध से निकलती हुई, मानवता के लिए किसी प्राचीन किंतु प्राणवान रोशनी की तरह है। उनकी प्रासंगिकता पर चर्चा करना किसी पुराने श्लोक का पाठ नहीं, बल्कि वर्तमान की कटु सच्चाइयों का सामना करना है।

आखिर बुद्ध ने ऐसा क्या कहा था जो आज तक हमारी चेतना को जागृत कर रहा है। उन्होंने युद्ध के मैदानों से बाहर निकलने का मार्ग दिखाया था, पर मनुष्य

को यह मार्ग सदा बहुत कठिन लगा है। दुनिया की शक्तियां आज भी यह मानती हैं कि शांति युद्धों से निकलेगी और समझौता मिसाइल के साए में होगा, जबकि बुद्ध की शिक्षा है कि हिंसा का अंत हिंसा को और जन्म देता है, यह एक चक्र है। वर्तमान संघर्षों का अध्ययन बताता है, हर बदले की आग में नया बदला छिपा रहता है। हर सीमा पर खड़ी बंदूक के पीछे कोई आहत मन खड़ा है जिसे यह विश्वास दिला दिया गया है कि दूसरे का विनाश ही उसकी सुरक्षा है।

बुद्ध की शिक्षा, मनुष्य को भीतर से बदलने की बात करती है। उस भीतर में कोई राष्ट्रीय सीमा नहीं होती। वहां कोई सैनिक नहीं होता, कोई दुश्मन नहीं, केवल एक बेचैन मन होता है जो शांति की तलाश में भटकता होता है। उनका मार्ग यह नहीं कहता कि युद्ध से भाग जाओ, बल्कि यह बताता है कि युद्ध मन से हटे बिना धरती से कभी नहीं हटेगा। आज के राजनैतिक शासकों के सामने यह कथन कितना असुविधाजनक है, यह इसी से सिद्ध होता है कि वे शांति की बात करते हुए भी परमाणु हथियारों के परीक्षण करते रहते हैं। बुद्ध बताते थे कि अहंकार ही युद्ध का असली कारण है और यह अहंकार न कोई सीमापार करता है न किसी झंडे का गुलाम होता है। वह हम सभी में समान रूप से पलता है और जब वह फूटता है तो छोटे या बड़े रूप में मानवता उसकी चपेट में आ जाती है।

आज की दुनिया में यदि बुद्ध प्रकट होते तो शायद कहते कि मनुष्य ने तकनीक को तेज कर लिया है, लेकिन मन को सुस्त छोड़ दिया है। उसके हथियार बिजली की गति से चलने लगे हैं, पर समझ अभी भी पैदल है। बुद्ध की प्रासंगिकता इसलिए भी बढ़ जाती है कि उन्होंने दुख को स्वीकारने की कला सिखाई थी। आज का समाज दुख से बचना चाहता है, उसे नकारना चाहता है, छिपाना चाहता है और उसके नकार में ही वह और हिंसक होता जा रहा है। यदि मनुष्य अपने भीतर के दुख को पहचान ले, उसे समझ ले, तो शायद वह दूसरे के दुख को भी समझ पाए और वही समझ युद्धों का अवरोध बन सकती है। दुख का यह मनोविज्ञान शांति के किसी भी सम्मेलन से कहीं अधिक कारगर है, पर यह विज्ञान, सत्ता को डराता है क्योंकि इससे हथियारों का व्यापार बंद हो सकता है। वैश्विक युद्धों के बीच बुद्ध का विचार किसी उपदेश की तरह नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक आवश्यकता की तरह है। मनुष्य ने बाहर की दुनिया को जितना भी बदल लिया हो, भीतर की दुनिया वैसी ही है। उस भीतर से ही हिंसा का बीज फूटता है और उसी भीतर में दया की पहली कोपल जन्म लेती है। बुद्ध ने इसी कोपल की ओर इशारा किया था। उन्होंने कहा था कि मन का शुद्धिकरण करो, तभी बाहरी दुनिया भी शांत हरी भरी होगी। लेकिन हम ने मन की बंजर जमीन को यूँ ही छोड़

रखा है तथा प्रभुता के पागलपन में युद्ध के लिए अपने कुतर्क गढ़ लिए हैं।

आज जब कोई राष्ट्र दूसरे पर आक्रमण करता है तो वह अपने लोगों को यह विश्वास दिलाता है कि यह आवश्यक है। बुद्ध ऐसी आवश्यकताओं पर मुस्करा देते। वे पूछते कि यदि हिंसा आवश्यक है तो शांति किस दिन गैर आवश्यक घोषित कर दी जाएगी। वे शायद यह भी बताते कि मनुष्य की सबसे बड़ी भूल यह है कि वह युद्ध को असाधारण घटना मानता है जबकि वह उसे अपने भीतर रोज घटित होने देता है। वही भीतर का युद्ध बाहर के युद्धों को जन्म देता है और मनुष्य इस चक्रव्यूह में फंसता जाता है। इस दुनियावी संकटग्रस्त समय में बुद्ध की प्रासंगिकता किसी पुरानी गुफा से निकली प्रतिध्वनि नहीं है। वह वर्तमान का दबाव है, विवेक का आग्रह है, और मनुष्य का अंतिम सहारा है। यदि दुनिया शांति चाहती है तो उसे बुद्ध को पढ़ना नहीं, समझना पड़ेगा। समझने के लिए मन को निर्मल करना पड़ेगा और यह निर्मलता शायद किसी सौदेबाज संधि से उत्पन्न नहीं होगी। यह तब पैदा होगी जब मनुष्य समझ पाएगा कि जीतना भी एक प्रकार की हार हो सकती है और युद्धों का कोई विजेता नहीं होता, वहां केवल मानवता घायल होती है।

बुद्ध मानव मन की इकाई पर वैचारिक कार्य चाहते हैं, पर वर्तमान विश्व समान स्वार्थी समूहों में उन प्रभुतावादी मूर्ख नेताओं

के हाथों चल रहा है, जिन्होंने कभी बुद्ध को पढ़ा या समझा तक नहीं है, वे किसी विचारक लेखक की लिखी बुद्ध की सैद्धांतिक बातों को अपने तरीके से विवेचना कर स्पीच देते हैं। बुद्ध की रोशनी आज भी उतनी ही उजली है, बस हमारे आंखों पर चढ़े चश्मे की धूल बढ़ गई है। यदि हम इस धूल को साफ कर पाएं, तो शायद दुनिया को समझ आएगा कि हथियारों का ढेर जितना ऊंचा होता है, मनुष्य उतना ही छोटा हो जाता है। और जब मनुष्य छोटा होने लगे तो बुद्ध की राह ही उसे फिर से बड़ा बना सकती है। इसके लिए आम लोगों को केवल बुद्ध के मंदिर जाने से ज्यादा उनके विचार को राजनीति में, अपने नेतृत्व के चयन में इस्तेमाल करना पड़ेगा। बुद्ध की शिक्षा में वैश्विक शान्ति है, हर मन की शांति है, उसका इस्तेमाल आवश्यक है, यही उनकी सबसे बड़ी और सबसे आवश्यक प्रासंगिकता है।



(विवेक रंजन श्रीवास्तव)
विभूति फीचर्स

भाग्य ऐसे चमकते है

Sanjay Khurana

- 1) सुबह उठकर सबसे पहले अपना दोनो हाथोंकी हथेलियों का दर्शन करे, अपने चेहरे पर लगावे।
- 2) सूर्योदय से पहले उठे।
- 3) उगते हुए सूर्य का दर्शन करें।
- 4) एक मट्टी अवाज पक्षियों को डाले।
- 5) सप्ताह या महिने में एक बार चिटियों के भोजन कीव्यवस्था अवश्य करें।
- 6) मंदिर जाएं या घर पर आर्ये खाली हाथ नजायें।
- 7) फल या मिठाई जब भी लाएं सबसे पहले थोडा सा निकाल कर भगवान को भोग अवश्यलगाएं।
- 8) बाखुव और बाल बुधवार और शुक्रवार काटने और, कटवाने का नियम बनालें।
- 9) गाय को हर रोज रोटी नहीं खिला पाये तो महीने न अमावस्या के दिन गौशालामें अपने श्रद्धाके अनुशार गेहूँ और गुड का दान अवश्य करें
- 10) रसोई घर में उत्तर दिशा में कलश भर के आवश्यक रखें

Sanjay Khurana

भारती भोजपुरी भाव – आदमियत

जब मन में ठान लेई आदमी मुकाम मिली काहे ना।
राज जिनगी जान लेई आदमी हर काम होई काहे ना।

जनम लेले जब देवतो धरती पर पावेले दुख बहुत।
करम संघर्ष करी जे इहां फूल अंजाम खिली काहे ना।

देह चोर मलेला हाथ हरदम कुछ हासिल ना होला।
बहाई जे पसीना श्रम के जिन्गी आराम मिली काहे ना।

नियत साफ औरी नियम पर चले जे खाई ना ठोकर।
हीया में सच्चाई ना केहू के रोवाई भगवान मिली काहे ना।

बना भारती आदमी करा भलाई दुनिया इहे आदमियत ह।
टूटल घर जुड़ी जब विश्वास रही खानदान मिली काहे ना।

श्याम कुंवर भारती (राजभर)
बोकारो,झारखंड

विचार प्रवाह

मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण यह नहीं है कि उसने कितना लम्बा जीवन जिया है, महत्त्व इस बात का है कि उसके जीवन में कितनी मुश्किलें मिलीं और उन सबसे किस तरह उसने स्वयं को सफलतापूर्वक बाहर निकाला, क्योंकि हमारे अपने व्यक्तिगत जीवन के कार्य ही हमारी गुणवत्ता सिद्ध करते हैं।

जय श्री कृष्ण

दिल से करूँ धन्यवाद

हे मेरे भाग्य विधाता
युगल रूप में सुनीता दी
मेरे सुख के तुम दाता
आध्यात्म, धर्म, सेवा
करुणा, ज्ञान, मानवता
सब ही तो मिली मेवा
दो बच्चों की सौगात दी
सुख, शांति की बरसात की
मन, विचारों से एक है हम
ऐसी गृहस्थी बेमिसाल दी
वर्षों के इस सफ़र में
उपलब्धियां तुमने अपार दी
कृपा प्रभु सदा बनी रहे
विकारों से हम दूर रहे
लक्ष्मी नारायण से हम रहे
प्रेमभाव का संचार हो
सद्गुणी हमारे विचार हो
ईश्वरीय याद में रहे सदा
खुशियों की हो बरसात
सदा।

—श्रीगोपाल नारसन

हरे शम हरे शम शम शम हरे हरे । हरे कृष्णा हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

॥ चतुर्थ पुण्यस्मरण ॥

अखंड हरिकीर्तन, श्रद्धांजली,

भजन संध्या एवं भंडारा

में आप सादर आमंत्रित हैं ।



स्व. श्रीमती भगवती नरसिंह दुबे (माँ जी)

जन्म : ०२-०१-१९३५ * स्वर्गवास : १७-१२-२०२१

अपनी बगिया के फूलों को प्रेम और एकता रुपी माला में स्नेह से पिरोकर रखनेवाली

परम् पूज्यनीया माताजी स्व. श्रीमती भगवती नरसिंह दुबे (माँ जी)

इनके तृतीय पुण्यस्मरण के अवसर पर श्री अखंड हरिकीर्तन (अष्टयाम),

श्रद्धांजली, भजन संध्या तथा भंडारा आयोजित किया गया है ।

अतः आप सभी स्नेही जन इस कार्यक्रम मे उपस्थित होकर हमें एवं हमारें परिवार को कृतार्थ करें ।

* कार्यक्रम *

१६ दिसम्बर २०२५ मंगलवार : श्री अखंड हरिकीर्तन शुभारंभ प्रातः १० बजे से

१७ दिसम्बर बुधवार श्री अखंड हरिकीर्तन पूर्णाहुति प्रातः १० बजे

दोपहर १० से ४ - पूजन, हवन, आरती

सायं ५ बजे से श्रद्धांजली, भजन संध्या एवं भंडारा

स्थान : दुबे इस्टेट प्रांगण, नालासोपारा (पूर्व). तहसील - वसई, जिला - पालघर, महाराष्ट्र ४०१ २०९.

* निवेदक *

श्री. श्यामसुंदर नरसिंह दुबे (पुत्र)

डॉ. ओमप्रकाश नरसिंह दुबे (पुत्र)

श्रीमती उषा शैलेश दुबे (पुत्री)

एवं समस्त
दुबे परिवार

श्री. जयप्रकाश नरसिंह दुबे (पुत्र)

श्रीमती आशा अवधेश दुबे (पुत्री)

श्री. नरेश नरसिंह दुबे (पुत्र)

हरे शम हरे शम शम शम हरे हरे । हरे कृष्णा हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

सम्पादकीय...

अर्थव्यवस्था में नई जान फूंकते गांव,
भारत की आर्थिक सूरत बदल रही

भारत ने 2024-25 में 35.77 करोड़ टन अनाज पैदा करके एक ऐतिहासिक रिकार्ड बनाया है। पिछले दस सालों में भारत का खाद्यान्न उत्पादन 10 करोड़ टन बढ़ा है। यह खेती में आत्मनिर्भरता और गांवों के विकास की तरफ देश की लगातार बढ़ती रफ्तार को दिखाता है। इस समय जहां वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर लगभग तीन प्रतिशत है और जी-7 देशों की अर्थव्यवस्थाएं औसतन करीब 1.5 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, वहीं भारत में 2025-26 की दूसरी तिमाही में जीडीपी की वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत रही है। इन दिनों भारत के आर्थिक परिदृश्य से संबंधित विभिन्न अध्ययन रिपोर्टों में यह तथ्य रेखांकित हो रहा है कि चालू वित्त वर्ष 2025-26 में ग्रामीण भारत से अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है। इन रिपोर्टों के अनुसार गांवों में खपत तेजी से बढ़ रही है। ग्रामीण गरीबी में कमी, छोटे किसानों की साहूकारी कर्ज पर निर्भरता में कमी, ग्रामीण खपत में वृद्धि, किसानों का जीवन स्तर बढ़ने जैसी विभिन्न अनुकूलताओं से ग्रामीण भारत मजबूती की राह पर आगे बढ़ रहा है। रिजर्व बैंक ने मौद्रिक नीति समीक्षा की हालिया बैठक में कहा भी कि भारत में महंगाई घटने में कृषि उत्पादन और ग्रामीण विकास का महत्वपूर्ण योगदान है और आगे भी महंगाई नियंत्रण में खाद्यान्न उत्पादन की अहम भूमिका रहेगी। विश्व बैंक की रिपोर्ट के मुताबिक ग्रामीण सुधार, बेहतर कृषि उत्पादन, ग्रामीण उपभोग में बढ़ोतरी तथा कर सुधार जैसे घटकों के दम पर भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बना रहेगा। इसी तरह एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स द्वारा प्रकाशित एशिया-पैसिफिक इकोनॉमिक आउटलुक रिपोर्ट 2025 के मुताबिक ग्रामीण भारत में विकास की सकारात्मकता है। महंगाई घटने और करों में कटौती से भारत की ग्रामीण खपत में सुधार हुआ है। रिजर्व बैंक द्वारा प्रकाशित ग्रामीण उपभोक्ता विश्वास सर्वेक्षण पर आधारित रिपोर्ट के अनुसार पिछले एक साल में 76.7 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों में उपभोग वृद्धि और 39.6 प्रतिशत परिवारों में आय में वृद्धि सामने आई है। इसी तरह एसबीआई रिसर्च द्वारा गरीबी पर जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि गरीबी में कमी शहरी इलाकों की तुलना में ग्रामीण इलाकों में अधिक तेजी से आई है। जहां 2011-12 में ग्रामीण गरीबी 25.7 प्रतिशत और शहरी गरीबी 13.7 प्रतिशत थी, वहीं 2023-24 में ग्रामीण गरीबी घटकर 4.86 प्रतिशत और शहरी गरीबी घटकर 4.09 प्रतिशत पर आ गई है। हाल में जारी नाबार्ड की सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में अब 54.5 प्रतिशत परिवार औपचारिक स्रोतों-क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, सहकारी समितियों आदि से ऋण लेते हैं, जो अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है। उल्लेखनीय है कि 2019 से शुरू की गई प्रधानमंत्री किसान सम्मान योजना भी करोड़ों छोटे और सीमांत किसानों को वित्तीय मजबूती दे रही है। अप्रैल 2020 से शुरू की गई पीएम स्वामित्व योजना के तहत ग्रामीणों को उनकी जमीन का कानूनी हक देकर उनके आर्थिक सशक्तीकरण का नया अध्याय लिखा जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में औपचारिक ऋण व्यवस्था ने अच्छी प्रगति की है। गांवों में बैंक शाखाओं की संख्या मार्च 2010 के 33,378 से बढ़कर दिसंबर 2024 तक 56,579 हो गई है। इसके साथ ही किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) कृषि इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड, सहकारी समितियों और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण बैंकिंग व्यवस्था भी प्रभावी भूमिका निभा रही है। सरकार ने बीते 11 वर्षों में फसलों पर दी जाने वाली सब्सिडी और फसल बीमा राशि को बढ़ाया है। हालांकि देश का कुल कृषि निर्यात 50 अरब डालर के पार पहुंच गया है, लेकिन हमें अभी भी ग्रामीण भारत के विकास और किसानों की प्रगति के लिए कई बातों पर ध्यान देना होगा। छोटे और सीमांत किसान आधुनिक खेती की तकनीक अपनाने में असमर्थता अनुभव कर रहे हैं। छोटे किसान आनलाइन खरीदारी में बहुत पीछे हैं। अभी भी ग्रामीण जनजीवन के करीब 22 प्रतिशत लोगों की कर्ज के लिए साहूकारों और अन्य अनौपचारिक स्रोतों पर निर्भरता बनी हुई है। यह वर्ग ऊंची ब्याज दर पर कर्ज देता है और उसकी औसत ब्याज दरें लगभग 17-18 प्रतिशत से भी अधिक होती हैं। जब छोटे किसानों को मौसमी जोखिम और सरकार से पर्याप्त धन हस्तांतरण की कमी का सामना करना पड़ता है, तब वे भारी ब्याज के बावजूद साहूकारों की चौखट पर दस्तक देते हैं। कई बार छोटे किसान औपचारिक स्रोतों से ऋण लेना तो चाहते हैं, मगर इसमें दस्तावेजों की कमी, गारंटी दाता का अभाव एवं अन्य शर्तें बाधा डालती हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 50 प्रतिशत कृषि परिवार अभी भी कर्ज में डूबे हुए हैं। ऐसे में गांवों में साहूकारों और अनौपचारिक ऋणों पर निर्भरता घटाने के लिए बैंक शाखा विस्तार के अलावा अन्य कदम उठाने की भी जरूरत है। यह समय की मांग है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के अंतिम छोर तक मजबूत गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) की भूमिका को प्रभावी बनाया जाए।

एक और बाबरी खतरे की घंटी

एक बाबरी मस्जिद के कारण भारतवासी आजादी के बाद अनेकों दर्द झेले हैं। अनगिनत लोग अकाल काल कवलित हुए। खरबों की सम्पत्ति बरबाद हुई। कितने बेघर हुए तो, कितनों का अता पता ही नहीं है। किसी तरह पांच सौ वर्ष तक चले मुकदमें के बाद निपटान हुआ। एक बहुत बड़ा कांटा निकला। देश थोड़ा ही शांति की तरफ बढ़ा था कि एक और बाबरी की नींव उसी दिन रखी गई, जिस दिन बाबरी मस्जिद को धार्मिक उन्मादियों द्वारा ढहाया गया था। जिस तरह से उसी दिन बंगाल के मुर्शिदाबाद में बाबरी नाम से मस्जिद की नींव पड़ी, वो एक खतरे की घंटी बजने का इशारा है। मस्जिद ही बनानी थी तो पैगम्बर मुहम्मद साहब के नाम से बनाते। किसी को कोई आपत्ति न होती। मगर बाबर के नाम से मस्जिद बनाना समझ से परे है। क्या बाबर मुसलमानों का खुदा है। यदि नहीं तो मुसलमान बाबरी मस्जिद में शीश कैसे झुका सकता है। जबकी कुरान के अनुसार कोई भी मुस्लिम खुदा के सिवा किसी के आगे शीश नहीं झुका सकता। तो मुसलमान बाबरी मस्जिद में किसके आगे सजदा करेगा। क्योंकि जाहिर है जब नाम बाबरी है तो मुस्लिम बाबर के सामने ही शीश नवायेगा। तो क्या मुसलमान बाबर को ही खुदा मानते हैं।

जिस तरह से बाबरी मस्जिद के लिए चंदा आ रहा है। जिस तरह से लोग ईंटे लेकर वहां पहुंचे हैं, वो तो यही बता रहे हैं कि बाबर मेरा खुदा है। इस विषय पर मुस्लिम धर्मगुरुओं को आगे आकर स्थिति को समझाना चाहिए। ए बताना चाहिए कि बाबर खुदा नहीं है। न ही बाबरी मस्जिद को मान्यता दी जायेगी। मगर ऐसा न करके मुसलमान समाज यह मान रहा है कि बाबर ही उसका खुदा है। यह संकेत देशहित में कर्तई नहीं है। जिस तरह से मौलवी लोग मूक समर्थन दे रहे हैं। जिस तरह से अल्प समय में अरबों रुपए चंदे के रूप में आ गये। जिस तरह से मुस्लिम समाज ईंट सिमेंट लेकर लाखों की संख्या में पहुंचे हैं। वो एक विध्वंसक गतिविधि की नींव डाल रहे हैं। इसे जितनी जल्दी हो सके रोंका जाय। यह घटना एक बहुत बड़े धार्मिक उन्माद की तरफ इशारा कर रही है। समय रहते यदि इसे रोका नहीं गया तो इसके दुष्परिणाम को रोकने में देश की आधी जीडीपी स्वाहा हो जायेगी। जैसा कि विध्वंस हुई बाबरी मस्जिद के कारण होता

आया है। आज राम मंदिर की जगह पर अस्पताल और विद्यालय खुलवाने की वकालत करने वाले कहों हैं। क्यों नहीं बंगाल के मुर्शिदाबाद में बनने वाली बाबरी मस्जिद की जगह पर अस्पताल और विद्यालय बनवाने की मांग कर रहे। यह भी बात समझ से परे है। क्या अब देश में विद्यालय और अस्पताल पर्याप्त हो गये हैं। जो बनने वाली मस्जिद पर नहीं मांग कर रहे हैं। या कुत्सित मानसिकता के चलते बकवास कर रहे थे। अभी हाल ही में बिहार में चुनाव हुआ। तो अभिनेता से नये नये नेता बने महाशय ने कहा कि भगवान श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर की कोई आवश्यकता नहीं थी। वहां तो अस्पताल या विद्यालय बनना चाहिए। वो भी आज अंधे बहरे गूंगे तीनों हो गये हैं। एक शब्द भी नहीं बोल पाते कि बाबरी मस्जिद की जगह हुमायूँ भाईजान एक बढ़िया सी अस्पताल बनवाइए। मुर्शिदाबाद में उसकी बहुत आवश्यकता है। या विद्यालय ही बनवा दीजिए। नहीं कह पाते। कहते तो शायद बाबर की औलादें नाराज हो जाती। ए बाबर की औलादों की नाराजगी मोल नहीं लेंगे। हाँ सनातनियों की नाराजगी के ये परवाह नहीं करते। वह बुद्धिजीवी गैंग कहों चली गई। जो राम मंदिर की जगह पर अस्पताल विद्यालय बनाने की सलाह दिन रात दिया करती थी। बंगाल में बन रही मस्जिद का विरोध न करके तथा कथित बुद्धिजीवी अपनी कुत्सित मानसिकता उजागर कर दिए। ए कुबुद्धि जीवी भी देश के लिए बहुत घातक हैं। इनकी बुद्धि बस देश को आग के हवाले करने में ही तेज है। सनातनियों में एकता न हो इसलिए तरह तरह के तरकीब बनाते रहते हैं। अभी तो एक अलग ही तरकीब लेकर आये हैं। सनातन में ही बिखराव करने का गजब का तरीका ढूँढ लाये हैं। कहते हैं सनातन धर्म है और हिन्दू जाति। मगर यही बात ये देशद्रोही सनातन संस्कृति के विध्वंसक किसी अन्य धर्म के बारे में नहीं बोलते। वैसे ही जैसे आज बंगाल में बन रही बाबरी मस्जिद के बारे में नहीं बोल रहे।

मुझे एक बात ये समझ में नहीं आई कि जब मस्जिद बनाने का ऐलान हुमायूँ कबीर ने किया था तो उसे रोंका क्यों नहीं गया। केंद्र और राज्य सरकारें मौन समर्थन क्यों देती रहीं। क्या अब यूपी के अयोध्या के बाद बंगाल के मुर्शिदाबाद को राजनीतिक

अखाड़ा बनाने की प्लानिंग हो रही है। जिसके लिए बाबरी मस्जिद की नींव को खोदने से रोंका नहीं गया। वहां चंदा कहों से आ रहा है, कौन हैं वो लोग जो बुझी आग को पुनः उद्गार रहे हैं। इसकी जाँच क्यों नहीं की जा रही। पता तो चले देश में कितनी बाबर की औलादें हैं। जो बाबर को अपना खुदा मानते हैं। माना कि बंगाल सरकार ने आंख मूंद रखी है। पर केंद्र सरकार क्यों नहीं रोंकी। यह बात बहुत आहत कर रही है। यदि बंगाल सरकार रोकने में असमर्थ थी तो केंद्र सरकार अपने अधिकारों का उपयोग क्यों नहीं की। बाबरी मस्जिद जिस दिन गिरी थी। उसी दिन यूपी समेत देश के चार राज्यों की सरकारें गिरा दी गई थी, केंद्र सरकार के द्वारा। तो अब उसे रोकने के लिए केंद्र सरकार ने बंगाल सरकार को क्यों नहीं गिराई। वहां मस्जिद की नींव नहीं देश के विकास की गति खोदी गई है। वहां मस्जिद का शिलान्यास नहीं हुआ है। वहां गजवा ए हिन्द की नींव रखी गई है। और भारत को दफनाने के लिए कब्र खोदी गई है। अभी भी समय है। उसे बनने से पहले ही समतल किया जाय। वरना वह भी एक दिन गले की फांस बनकर हम भारतवासियों के गले में फंस जायेगी। क्योंकि वो इबादतगाह नहीं देशवासियों के लिए कब्रगाह बनेगी। जिस तरह का माहौल इस समय बंगाल में बनाया जा रहा है। या बन रहा है। जिस तरह से भारतीय मौलानाओं के बिष भरे बोल सुनने को मिल रहे हैं। उस मेरा बस यही कहना है।

मंडली

काश्मीर की राह पर निकल पड़ा बंगाल।

तुष्टिकरण की नीति से होता नित कंगाल।।

होता नित कंगाल आम जन रोयें बिलखें।

कहते कवि जमदग्निपुरी प्रभु तेरे कैसे लेखे।।

जिनके लिए आमजन धूप छांव ना देखे।

नेतागण बलि ले उनसे करते हैं नित धोखे।।



—पं. जमदग्निपुरी

ब्रिटिश फरमान, 'गॉड! सेव द क्वीन' का गुणगान, अंग्रेजों की नींद उड़ाने वाला वंदे मातरम क्यों ना बन सका राष्ट्रगान?

राजनीति में कुछ चीजें कभी पुरानी नहीं पड़ती हैं। आप उन्हें कभी भी कुरेद दो और सियासत शुरू हो जाती है। ऐसा ही हमारा

काफी सख्ती थी। यह बात सबसे अधिक नागवार गुजरी एक डिप्टी कलेक्टर को, जो भारतीय था। अंग्रेजों के इसी आदेश और

विद्रोह का बिगुल फूंकते हैं। आनंद मठ में यह सन्यासी अपनी मातृभूमि को एकदेवी की तरह पूजते हैं और उसकी पूजा के लिए एक गीत गाते हैं। वंदे मातरम जिसमें मातृभूमि को मां दुर्गा की तरह चित्रित किया जाता है। बंकिम चंद्र चटर्जी का लिखा यह उपन्यास खूब पॉपुलर होता है। 1896 में कोलकाता में हुए कांग्रेस अधिवेशन में रवींद्रनाथ टैगोर के स्वर में पहली बार वंदे मातरम की सार्वजनिक प्रस्तुति होती है और फिर जल्द

फहराया जिस पर वंदे मातरम लिखा था। 17 अगस्त 1909 को जब मदन लाल दींगरा को विलियम हर्ट कर्जन के मर्डर के इल्जाम में फांसी दी गई तो उनके आखिरी शब्द थे वंदे मातरम। आगे चलकर वंदे मातरम को लेकर मतभेद और विरोध भी सामने आने लगे। धीरे-धीरे राजनीति इस पर शुरू हुई। 1920 में बंगाली मैगजीन इस्लाम दर्शन में वंदे मातरम को मूर्ति पूजा का रूप बताया गया। 1928 में शरीयत इस्लाम मैगजीन में कहा गया कि वंदे मातरम मुसलमानों के लिए हराम है।

मुसलमान वंदे मातरम को राष्ट्रीय गीत के रूप में नहीं स्वीकारा

1930 का दशक तब खत्म होने को था। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के रिश्तों में लगातार दूरियां बढ़ रही थी। इसी दौर में वंदे मातरम गीत विवादों के केंद्र में आ गया। मुस्लिम लीग के एक बड़े तबके में वंदे मातरम के खिलाफ नाराजगी इतनी गहरी हो चुकी थी कि सीधे मोहम्मद अली जिन्ना इसमें कूद पड़े। जिन्ना की निजी डायरी में 1938 के कुछ नोट्स मिलते हैं। ये नोट्स उन्होंने जवाहरलाल नेहरू से होने वाली बातचीत के लिए तैयार किए थे। इन नोट्स के सबसे ऊपर तीन लाइनें लिखी थी। मुस्लिम मास कांटेक्ट मस्ट सीज, वंदे मातरम मस्ट गो, नेशनल फ्लैग मस्ट गो। संदेश साफ था कि मुसलमान वंदे मातरम को राष्ट्रीय गीत के रूप में नहीं मानेंगे। चाहे उसका बदला हुआ वर्जन ही क्यों ना हो।

वंदे मातरम को लेकर गांधी का बदलता स्टैंड

वंदे मातरम को लेकर गांधी जी का स्टैंड समय के साथ बदलता रहा है। पहले उनकी राय अलग थी। 1905 से 1915 के बीच गांधी वंदे मातरम के बड़े प्रशंसक थे। उन्होंने इसे देशभक्ति से बड़ा गाना बताया। 1905 में उन्होंने अपने अखबार इंडियन ओपिनियन में लिखा कि हमारा राष्ट्रीय गान बन गया है। 1915 में उन्होंने कहा कि बहुत ही खूबसूरती से कवि ने भारत माता को दर्शाया है। 1940 का दशक आते-आते गांधी का नजरिया वंदे मातरम को लेकर के डिफेंसिव हो गया। महात्मा गांधी ने अपने अखबार हरिजन में लिखा कि वह वंदे मातरम को राष्ट्रभावना से जोड़कर देखते हैं। उन्होंने माना कि वंदे मातरम उन्हें गहराई तक छूता है। पर उन्हें कभी ऐसा नहीं लगा कि यह सिर्फ हिंदुओं के लिए है।

वंदे मातरम क्यों नहीं बन सका राष्ट्रगान

भारत के राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम को भी राष्ट्रगान बनाने की बात कही जा रही थी। लेकिन उसे राष्ट्रीय गीत बनाया गया। जिसके पीछे ये तर्क दिया गया कि इसकी चार लाइन ही देश को समर्पित हैं। बाद की लाइनें बंगाली भाषा में हैं और मां दुर्गा की स्तुति की गई है। किसी भी ऐसे गीत को राष्ट्रगान बनाना उचित नहीं समझा गया जिसमें देश का न होकर किसी देवी-देवता का जिक्र हो। इसलिए वंदे मातरम को राष्ट्रगान ना बनाकर राष्ट्रगीत बनाया गया।

कोहरे में लिपटी तराई, बादल व सूरज के बीच होती रही लुकाछिपी

बहराइच(संवाददाता)। तराई का न्यूनतम तापमान सोमवार को 8 डिग्री सेल्सियस पर स्थिर जरूर रहा, लेकिन ठंड में और बढ़ोतरी का अहसास हुआ, क्योंकि अधिकतम तापमान में मामूली गिरावट दर्ज की गई। सुबह कोहरे की चादर छाई रही। करीब 9:30 बजे धूप निकली, लेकिन पूरे दिन धुंध बनी रहने से गलन और ठिठुरन से राहत नहीं मिल सकी। सर्द हवाओं ने जनजीवन प्रभावित कर दिया। सोमवार को अधिकतम तापमान 24.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया, जो रविवार की तुलना में 0.1 डिग्री कम रहा। जिले में मौसम लगातार करवट बदल रहा है। सुबह कोहरे के बाद हल्की धूप दिखाई दी, पर बादल और सूरज के बीच पूरे दिन लुकाछिपी चलती रही।

राष्ट्र गीत वंदे मातरम है। आजादी से पहले भारतीयों को एक करने वाला ये गीत कई सालों से उन्हीं भारतीयों को बांटने के लिए काम में लिया जा रहा है। 'वंदे मातरम' को लेकर देश की राजनीति में एक बार फिर उबाल आ गया है। संसद के विशेष सत्र में राष्ट्रीय गीत के 150 साल पूरे होने पर लोकसभा में चर्चा हुई। प्रधानमंत्री ने अपना संबोधन भी दिया। वहीं 9 दिसंबर को राज्यसभा में भी ऐसी ही एक लंबी चर्चा की योजना है, जिसमें गृह मंत्री अमित शाह बोलेंगे।

क्या था अंग्रेजी फरमान
साल 1870 के दशक में ब्रिटिश हकूमत ने एक तुगलकी फरमान जारी किया। उन्होंने सरकारी समारोहों में 'गॉड! सेव द क्वीन' गीत गाया जाना अनिवार्य कर दिया था। उस वक्त ब्रिटिश प्रशासनिक सेवा में कई भारतीय अधिकारी भी थे। फरमान बंगाल की जमीन से ही आया था, इसलिए वहां इसे लेकर

अनिवार्यता क्षुब्ध वह कलेक्टर उस रोज दफ्तर से निकल आया। सियालदह से ट्रेन ली और नैहाटी पहुंचने तक का सफर इन्ही विचारों से भरा रहा। रेलयात्रा के दौरान उमड़-धुमड़कर आते तमाम विचार शब्द बन गए और कागज-कलम का साथ पाते ही गीत के रूप में उभर आए।

कैसे लिखा गया गीत
19वीं सदी में बंगाल के सबसे जानी मानी हस्तियों में से एक बंकिम चंद्र चटर्जी ने एक बहुचर्चित उपन्यास आनंदमठ लिखा। वैसे तो यह उपन्यास 1882 में किताब का शक्ल ले सका। लेकिन बंकिम चंद्र चटर्जी ने इसे 1881 से ही अपनी मासिक पत्रिका वंग दर्शन में एक धारावाहिक के तौर पर छापना शुरू कर दिया था। इस उपन्यास का मूल कथानक सन्यासियों के एक समूह पर फोकस था। जो अपनी मातृभूमि के लिए अपनी जिंदगी समर्पित कर देते हैं और ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ

ही यह गीत आजादी के आंदोलन में जोश भरने का काम करने लगता है। साल 1905 में बंगाल विभाजन का विरोध कर रहा हर एक आंदोलनकारी यही गीत गा रहा होता है।

अंग्रेजों के मुखालिफत का बना सिंबल

बांग्ला और संस्कृत भाषा में लिखा यह गीत धीरे-धीरे पूरे देश तक फैल जाता है और अंग्रेजों के मुखालिफत का सिंबल बनता है। ऐसे में साल 1907 में अंग्रेज वंदे मातरम पर बैन लगा देते हैं। लेकिन वंदे मातरम का असल विरोध करता है मुस्लिम लीग। अंग्रेज कांग्रेस को तोड़ने के लिए बांटो और राज करो की नीति अपनाते हैं। हिंदू मुस्लिम में फूट डालकर आपस में लड़वाने की कोशिश करते हैं। जिसका उन्हें फायदा भी मिलता है और साल 1909 में अमृतसर में हुए कांग्रेस अधिवेशन में मुस्लिम लीग वंदे मातरम का ही विरोध करने लगती है। जर्मनी में तिरंगा

जोड़ों के दर्द के लिए बेहद फायदेमंद होते हैं ये छोटे बीज, आज से ही डाइट में करें शामिल

आर्थराइटिस एक दीर्घकालिक समस्या है, जिसमें जोड़ों में दर्द, सूजन और जकड़न हो जाती है। आर्थराइटिस को ही गठिया का रोग कहा जाता है। यह जीवन की गुणवत्ता को बुरी तरह प्रभावित करता है। इस स्थिति से निपटने के लिए दवाइयों के साथ-साथ सही आहार बहुत जरूरी है। विशेषज्ञ मानते हैं कि कुछ छोटे बीज, जो आसानी से उपलब्ध होते हैं, जोड़ों के दर्द को कम करने में अत्यंत फायदेमंद हो सकते हैं। इन बीजों का मुख्य रहस्य है इनमें मौजूद ओमेगा-3 फैटी एसिड्स होते हैं। ओमेगा-3 में शक्तिशाली सूजन-रोधी गुण होते हैं, जो जोड़ों की सूजन और दर्द को कम करने में मदद करते हैं। इन बीजों में फाइबर, कैल्शियम,



और एंटीऑक्सीडेंट्स भी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, जो हड्डियों को मजबूत बनाने और ऑक्सीडेटिव तनाव से लड़ने में सहायक होते हैं। इन बीजों को अपनी दैनिक डाइट में शामिल करना न केवल आर्थराइटिस के लक्षणों को कम कर सकता है, बल्कि यह आपके संपूर्ण हृदय स्वास्थ्य और पाचन क्रिया को भी बेहतर बनाता है।

अलसी के बीज
अलसी के बीज ओमेगा-3 फैटी एसिड्स, विशेष रूप से 18:1 (अल्फा-लिनोलेनिक एसिड) के सबसे अच्छे शाकाहारी स्रोतों में से एक हैं। 18:1 शरीर में जाकर सूजन को कम करने वाले कंपाउंड में बदल जाता है। इसके अलसी के बीज को पीसकर पाउडर बनाकर दही, दलिया या स्मूदी में मिलाएं। इनका सेवन

कब्ज को भी दूर करता है।

चिया सीड्स
चिया बीज कैल्शियम, मैग्नीशियम और ओमेगा-3 फैटी एसिड्स से भरपूर होते हैं। ये छोटे बीज पानी को अवशोषित करके एक जेल जैसा पदार्थ बनाते हैं, जो जोड़ों को चिकनाई देने में मदद करता है। इसके लिए चिया सीड्स को रात भर पानी या दूध में भिगोकर चिया पुडिंग बनाकर खाया जा सकता है।

कद्दू के बीज
कद्दू के बीज जिंक और मैग्नीशियम का अच्छा स्रोत हैं। जिंक आर्थराइटिस में होने वाली सूजन को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये बीज एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होते हैं, जो मुक्त कणों से होने वाले नुकसान को रोकते हैं। इन्हें भूनकर स्नैक के रूप में या सलाद के ऊपर डालकर डाइट में शामिल

कर सकते हैं।

तिल के बीज
तिल के बीजों में सेसामिन नामक यौगिक होता है, जिसमें शक्तिशाली एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं। तिल कैल्शियम और कॉपर से भी भरपूर होते हैं, जो हड्डियों के स्वास्थ्य और मरम्मत के लिए आवश्यक हैं। तिल को भूनकर या इसके तेल का उपयोग खाना पकाने में कर सकते हैं।

सूरजमुखी के बीज
सूरजमुखी के बीज विटामिन ई का एक उत्कृष्ट स्रोत हैं, जो एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट है। विटामिन ई सूजन को कम करने और जोड़ों के दर्द में राहत देने में सहायक है। इसके अलावा, ये बीज मैग्नीशियम भी प्रदान करते हैं। इसके लिए सूरजमुखी के बीजों को हल्का सा भूनकर सलाद, सूप या दही में मिलाकर खाया जा सकता है।

कंधे में दर्द होने पर आजमाएं ये घरेलू नुस्खे, जल्द मिलेगा आराम

कंधे में दर्द होना एक आम समस्या है, जो किसी भी उम्र के लोगों को हो सकती है। यह दर्द अक्सर गलत मुद्रा में बैठने,

इसके लिए एक गर्म पानी की बोतल लें और उसे दर्द वाले हिस्से पर लगाएं। इसे लगभग 15-20 मिनट तक लगाकर रखें।

यह रक्त प्रवाह बढ़ाने में मदद करता है और मांसपेशियों की जकड़न को कम करता है। ध्यान रखें कि पानी बहुत गर्म न हो, वरना त्वचा को जलन हो सकती है। नियमित रूप से इसका उपयोग करें।

हल्दी का सेवन करें
हल्दी में खास तत्व होते हैं, जो सूजन कम करने में मदद करते हैं। यह गुण कंधे के दर्द को कम करने में सहायक हो सकता है। एक गिलास गर्म दूध में आधा चम्मच हल्दी पाउडर मिलाकर पीने से शरीर में सूजन कम

होती है और दर्द में राहत मिलती है। इसके अलावा आप हल्दी को खाने में भी शामिल कर सकते हैं, जिससे आपके शरीर को प्राकृतिक रूप से दर्द निवारण हो सके।

तिल का तेल लगाएं

तिल का तेल ओमेगा-3 फैटी एसिड से भरपूर होता है, जो मांसपेशियों की सूजन कम करने में मदद करता है। इस तेल को हल्का गर्म करके प्रभावित क्षेत्र पर मालिश करें। इससे रक्त प्रवाह

बढ़ता है और दर्द में राहत मिलती है। नियमित रूप से इस उपाय का उपयोग करने से आपके कंधे की मांसपेशियां मजबूत होती हैं और दर्द की समस्या कम होती है। यह एक सुरक्षित और प्रभावी घरेलू नुस्खा है, जिसे आप आजमा सकते हैं।

अदरक की चाय पिएं

अदरक में ऐसे तत्व होते हैं, जो दर्द निवारक की तरह काम करते हैं। एक कप पानी में कुछ टुकड़े ताजे अदरक के डालकर उबालें, फिर इसे छानकर पीएं। इससे आपके शरीर की अंदरूनी सूजन कम होती है और दर्द में राहत मिलती है। अदरक की चाय पीने से न केवल कंधे का दर्द कम होता है, बल्कि यह आपकी सेहत के लिए भी फायदेमंद होती है। नियमित रूप से इसका सेवन करें।

योग और स्ट्रेचिंग करें

योग और स्ट्रेचिंग कसरत करने से भी कंधे का दर्द कम हो सकता है। विशेषकर उन योगासनों का अभ्यास करें, जो कंधों की मांसपेशियों को खींचते-खिंचते हैं जैसे भुजंगासन, वीरभद्रासन आदि। इसके अलावा रोजाना 10-15 मिनट स्ट्रेचिंग करने से भी फायदा होता है। इन घरेलू नुस्खों को अपनाकर आप अपने कंधे के दर्द से जल्दी राहत पा सकते हैं और अपनी दिनचर्या को बिना किसी रुकावट के जारी रख सकते हैं।

कब है मनाई जाएगी धनु संक्रांति? नोट करें सही तिथि, शुभ मुहूर्त और पूजा विधि

हिंदू धर्म में धनु संक्रांति का विशेष महत्व माना जाता है। इस दिन ग्रहों के राजा सूर्य देव धनु राशि में प्रवेश करते हैं। इसी दिन से खरमास भी शुरू हो जाते हैं, जिस कारण अगले 1 महीने तक सभी मांगलिक काम वर्जित हो जाते हैं। खरमास में शादी-विवाह, गृह प्रवेश, नामकरण और मुंडन जैसे शुभ मांगलिक कार्य नहीं होते हैं। आइए आपको बताते हैं धनु संक्रांति की डेट से लेकर मुख्य बातें।

संक्रांति तिथि और शुभ मुहूर्त
हिंदू पंचांग के अनुसार, सूर्य देव 16 दिसंबर 2025, मंगलवार के दिन सुबह 04 बजकर 26 मिनट पर वृश्चिक राशि से निकलकर धनु राशि में गोचर करेंगे। सूर्य का धनु राशि में गोचर करने से इस दिन को धनु संक्रांति कहते हैं। इसके साथ ही खरमास की शुरुआत हो जाती है। धनु संक्रांति पर पुण्य काल सुबह 07 बजकर 09 मिनट से दोपहर 12 बजकर 23 मिनट तक रहेगा। वहीं, महा पुण्य काल सुबह 07 बजकर 09 मिनट से सुबह 08 बजकर 53 मिनट तक रहने वाला है। इसी के साथ ही इस दिन पुण्य क्षण 04 बजकर 27 मिनट पर ही रहेगा।

कब खरमास से शुरू हैं?

धनु संक्रांति का आरंभ हिंदू पंचांग के अनुसार, 16 दिसंबर 2025 को सूर्य धनु राशि में प्रवेश करेंगे। इस दिन से खरमास की शुरुआत मानी जाएगी। इसलिए 16 दिसंबर

2025 से लेकर 14 जनवरी 2026 तक किसी प्रकार का शुभ कार्य नहीं किया जाएगा। जब सूर्य 14 जनवरी को मकर राशि में प्रवेश करेंगे, तब खरमास समाप्त हो जाएगा और इसी के साथ सभी शुभ, मांगलिक और धार्मिक कार्यों की शुरुआत फिर से हो सकेगी।

धनु संक्रांति की पूजा विधि

— संक्रांति के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर पवित्र नदी में स्नान करना बेहद ही शुभ माना जाता है।

— यदि संभव न हो, तो आप घर पर ही नहाने के पानी में गंगाजल मिलाकर स्नान करें।

— इसके बाद, हाथ में जल और तिल लेकर दान तथा पूजा का संकल्प लें।

— अब सूर्य देव को तांबे के पात्र में जल में लाल चंदन, लाल फूल और अक्षत मिलाकर अर्घ्य दें।

— अर्घ्य देते समय 'धृआदित्याय नमः' या गायत्री मंत्र का जाप करें।

— धनु संक्रांति पर सूर्य देव को गेंहू और गुड़ का भोग लगाना काफी शुभ माना जाता है।

— इस दिन किया जाने वाला दान अक्षय फलदायी माना जाता है।

किन चीजों का दान करें

इस दिन गरीबों और जरूरतमंदों को गुड़, तिल, कंबल, गर्म कपड़े और अनाज (जैसे चावल व गेहूं) का दान करना चाहिए। ऐसा करने से जीवन की दरिद्रता दूर होती है और शुभ फल प्राप्त होते हैं।

14 या 15 दिसंबर कब है सफला एकादशी? जाने व्रत की सही तिथि और विष्णु कृपा के उपाय

हिंदू धर्म में एकादशी व्रत विशेष महत्व है। एकादशी तिथि भगवान विष्णु को समर्पित हैं। वर्ष में कुल 24 एकादशी तिथि पड़ती हैं और प्रत्येक महीने में 2 एकादशी मनाई जाती है। पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि पर सफला एकादशी तिथि मनाई जाती है। इस दिन पूजा-पाठ, व्रत और दान करने से जातक को सफलता, सौभाग्य और मनचाहे फल प्रदान करता है। एकादशी के दिन विधिवत रूप से पूजा व व्रत करने से साधक को सभी कार्यों में सकारात्मक परिणाम मिलता है। एकादशी का दिन छात्रों के लिए उत्तम होता है, भगवान विष्णु को कुछ चीजों का भोग लगाने से करियर-परीक्षा में सफलता के योग बनते हैं। इतना ही नहीं, श्री विष्णु अपने भक्तों के सभी कष्ट, पाप और बाधाओं को दूर करते हैं। ऐसे में कुछ लोगों को कन्फ्यूजन है कि 14 या 15 को कब सफला एकादशी मनाई

जाएगी। आइए आपको बताते हैं कब है सफला एकादशी।

सफला एकादशी 2025

हिंदू पंचांग के अनुसार, पौष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि 14 दिसंबर को शाम 6:49 बजे से प्रारंभ होकर 15 दिसंबर को रात 9:19 बजे समाप्त होगी। तिथि के अनुसार, सफला एकादशी का व्रत 15 दिसंबर 2025 को ही मान्य माना जाएगा।

पूजा का मुहूर्त

पंचांग के मुताबिक, सफला एकादशी पर ब्रह्म मुहूर्त सुबह 5 बजकर 17 मिनट से लेकर 6 बजकर 12 मिनट तक रहेगा। अभिजीत मुहूर्त सुबह 11 बजकर 56 मिनट से लेकर दोपहर 12 बजकर 37 मिनट तक मान्य है। इस दौरान चित्रा नक्षत्र बन रहा, जिस पर शोभन योग का संयोग बना रहेगा।

सफला एकादशी पूजा विधि

— सबसे पहले आप एक साफ चौकी पर पीले रंग का वस्त्र बिछाएं। अब इस चौकी पर भगवान विष्णु

जी की मूर्ति को स्थापित करें।

— अब आप भगवान को वस्त्र पहनाएं। इस दौरान श्री विष्णु का श्रृंगार करें और माला पहनाएं।

— इसके बाद आप भगवान विष्णु को चंदन का तिलक लगाकर 'धृ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयातः' मंत्र का जाप करना।

— अब साफ शुद्ध घी से दीपक जलाएं। इसके बाद बेसन का लड्डू, केले, पंजीरी और पंचामृत से श्री विष्णु को भोग लगाएं।

— इसके बाद सफला एकादशी की कथा पढ़ें। फिर आरती करें और सुख-समृद्धि की कामना करें।

— इसके बाद आप अन्न दान कर सकते हैं या फिर आप किसी जरूरतमंद को पैसे भी दे सकते हैं।

भगवान विष्णु की आरती

जय जगदीश हरे, स्वामी! जय जगदीश हरे।

भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे

जो ध्यावै फल पावै, दुख



बिनसे मन का।

सुख-संपत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन काध धृ जय...धृ

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।

तुम बिनु और न दूजा, आस करूं जिसकीधृ धृ जय...धृ

तुम पूरन परमात्मा, तुम अंतर्यामीधृ

पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामीधृ धृ जय...धृ

तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता।

मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ताधृ धृ जय...धृ

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।

किस विधि मिलूं दयामय! तुमको मैं कुमतिधृ धृ जय...धृ

दीनबंधु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे।

अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे जय...

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।

श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा जय...

तन-मन-धन और संपत्ति, सब कुछ है तेरा।

तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा जय...

जगदीश्वरजी की आरती जो कोई नर गावे।

कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे जय...

'दिवास्वप्न' के आलोक में वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य

शिक्षा साहित्य में ऐसी पुस्तकें बहुत कम हैं जो शिक्षक, विद्यार्थी, विद्यालय एवं समुदाय के पारस्परिक सम्बन्धों का विवेचन करते हुए बच्चों को समझने और उन्हें ज्ञानार्जन के सहज अवसर उपलब्ध कराने की बात करती हों, गिजुभाई बंधे का कृत 'दिवास्वप्न' एक ऐसी ही प्रेरक पुस्तक है। अफ्रीका से वर्ष 1909 में भारत वापस आकर गिजुभाई कानून की पढ़ाई पूरी कर वकालत के काम में लग गये। अपने पुत्र की शिक्षा के लिए जब उचित विद्यालय चाहा तो तमाम कोशिश और खोजबीन के बाद भी आनंदमय माहौल वाला विद्यालय न मिल सका। सभी विद्यालयों में बच्चे डर-भय की छाँव और पिटाई के साथ पढ़ने को विवश थे। तब आपने विश्व की प्रचलित शिक्षण पद्धतियों का अध्ययन आरम्भ किया और मारिया मोंटेसरी के शैक्षिक विचारों से प्रभावित हुए और उस विचार आधारित विद्यालय खोलने की योजना बनाई। एक ऐसा विद्यालय जहाँ बच्चों को अपनापन मिले, जहाँ बच्चों के मस्तिष्क, हृदय और हाथ के हुनर को तरासा जाए।

गिजुभाई ने 1918 में अपने सहयोगियों के साथ मिलकर वर्ष दक्षिणामूर्ति बालमंदिर की स्थापना की और शिक्षक के रूप में काम करते हुए जो अनुभव अर्जित किया है, उसे ही 'दिवास्वप्न' के रूप में लोक को सौंप दिया। आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व गिजुभाई विद्यालय की छवि एक आनंदघर के रूप में देखते थे और तब वह न केवल कल्पना करते हैं बल्कि तमाम झंझावात, रुकावट, चुनौतियों, बाधाओं से लड़ते-जूझते अपने प्रयोग सिद्ध

कर शिक्षा की एक आनंदमय शिक्षण पद्धति का स्वरूप विकसित करते हैं।

गिजुभाई जब अपने शैक्षिक प्रयोग करने की अनुमति हेतु अधिकारी से मिलते हैं तो अधिकारी का वह जवाब आज भी ज्यों का त्यों हवा में तैर रहा है। वह कहते हैं, "देखो, जैसे चाहो वैसे प्रयोग करने की स्वतंत्रता तो तुम्हें है ही लेकिन यह भी ध्यान में रखना कि बारहवें महीने में परीक्षा सामने आ खड़ी होगी और तुम्हारा काम परीक्षा के परिणामों से मापा जाएगा।" आश्चर्य है और कसक भी कि आज भी हम इस अंक आधारित परीक्षा प्रणाली से मुक्त नहीं हो पाए हैं। यह परीक्षा प्रणाली जो बच्चे के मौलिक एवं स्वतंत्र चिंतन कल्पना करने और उसके अनुभव से अर्जित ज्ञान की अभिव्यक्ति में एक सबसे बड़ी बाधा के रूप में उपस्थित है। परीक्षा में उसकी उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन पाठ पर आधारित तथ्यों और संदर्भ पर ही निर्भर है, बच्चे की समझ आधारित उत्तरों पर नहीं। यह परीक्षा प्रणाली बच्चों को रटन्ट पद्धति स्वीकारने को विवश करती है न कि उनमें वैज्ञानिक चेतना-चिंतन का विकास करने, तर्क, अनुमान, अवलोकन, विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने की क्षमता वृद्धि का अवसर देती है।

बच्चे अनंत ऊर्जा से लबरेज होते हैं। एक शिक्षक को बच्चों के साथ काम करते हुए न केवल स्वयं को ऊर्जावान एवं धैर्यवान बनाए रखना होता है बल्कि सभी बच्चों के साथ मिलकर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को भी गति देनी होती है। ऐसी

स्थिति में प्रायः पूर्व नियोजित योजनाएँ ध्वस्त हो जाती हैं और शिक्षक को तत्काल नवीन गतिविधियाँ खोजना आवश्यक हो जाती हैं। गिजुभाई लिखते हैं, "मेरे ये नोट्स बेकार हैं। घर में बैठे-बैठे अटकलें लगाना और कल्पना में पढ़ा लेना सहज था लेकिन यह तो लोहे के चने चबाने जैसा है।"

छुट्टी बच्चों को आनंद प्रदान करती है। छुट्टी की घंटी बजते ही कक्षाओं में कैद खुशबू जैसे मुक्त हो जाने का उत्सव मनाती हो। ऐसा उल्लास और प्रसन्नता बच्चों के चेहरे पर देखा जा सकता है जैसे वे कष्ट एवं यातना के पलों से मुक्त हो गये हों। तमाम शिक्षा आयोग के रिपोर्टों एवं नीतियों की अनुशंसाओं के बावजूद हम कक्षाओं को पारंपरिक शिक्षण से मुक्त करके विद्यालयीय परिवेश को सहज सुरम्य समता ममता भरा आनंददायी नहीं बना पाए हैं। गिजुभाई बच्चों के साथ काम करने के कुछ सूत्र प्रदान करते हैं— कहानी, कविता, खेल और भ्रमण।

शिक्षकों को समझना होगा कि बच्चों को पढ़ना-पढ़ाना उनका दायित्व है, जिम्मेदारी और कर्तव्य है। वे तो बस सरकारी दिशानिर्देशों में बँधे पाठ्यपुस्तकें पढ़ा रहे हैं। पाठ्यक्रम पूरा करने के दबाव में हैं और केवल सूचनाएँ सम्प्रेषित कर रहे हैं। बच्चों की कितनी समझ बनी है, कक्षा में ज्ञान अर्जित करने के कितने अवसर बना पायें हैं और अर्जित ज्ञान को वे अपने सामाजिक जीवन और व्यापक संदर्भों से कैसे जोड़ पा रहे हैं? यह जानने-समझने की किसी को न चिंता है और न समय। बच्चों में समझ के स्तर पर

बेहतरी हो, ऐसा रुचिकर संवाद करने का समय शिक्षकों के पास नहीं होता क्योंकि गैर शैक्षिक कार्यों में ड्यूटी लगा दी जाती है। कह सकते हैं कि शिक्षकों को आजादी नहीं है।

आज बच्चों का शैक्षिक सामाजिक नुकसान भविष्य में समाज और राष्ट्र की एक बड़ी क्षति के रूप में प्रकट होने वाला है, यह हम नहीं समझ पा रहे हैं। गिजुभाई 'दिवास्वप्न' के माध्यम से भारतीय शिक्षा तंत्र के नीति निर्धारकों को एक रास्ता सुझाते दिखाई देते हैं। एक ऐसा रास्ता जिससे गुजर कर हम विद्यार्थियों में जीवन का संचार कर सकते हैं, जहाँ बच्चों का न केवल मधुर स्वर सुनाई दे बल्कि जहाँ अपनी रचनात्मकता भी विभिन्न आयामों के साथ सहज रूप में प्रकट हो। जहाँ प्राथमिक विद्यालयों की चारदीवारी के अंदर लोक के प्राणों का स्पंदन हो और लोक का राग ध्वनित हो, जहाँ प्रत्येक पल उत्सवधर्मी हो ताकि आनंदित बच्चों में नित नवल सृजन की इच्छा आकांक्षा और सिद्धि का शुभ संकल्प हो।

गिजुभाई पढ़ने के संस्कृति के पोषक के रूप में हमें दिखाई देते हैं वह विद्यालयों में पुस्तकालयों की स्थापना को बहुत आवश्यक मानते। वे कहते हैं कि छात्रों से पाठ्यपुस्तकें खरीदवाई ही न जाएँ और उन पुस्तकों की कीमत में पढ़ने योग्य अच्छी पुस्तकें खरीद कर एक पुस्तकालय बना दिया जाए। प्रतिवर्ष पाठ्यपुस्तकें खरीदने से बेहतर है कि हम बच्चों से सत्रांत में पुस्तकें विद्यालय में जमा करवा ले और नए सत्र में बच्चों को वितरित कर दें, इससे विभाग

पर किताबें खरीदने का भार भी कम पड़ेगा और पर्यावरण की रक्षा भी होगी। अभिभावकों से संवाद हेतु वह एक सभा का आयोजन करते हैं पर 40 अभिभावकों को पत्र द्वारा सूचित करने के बावजूद केवल 7 अभिभावक ही उपस्थित होते हैं। आज भी स्थितियों में बहुत परिवर्तन नहीं आया है, उसका कारण है कि अभिभावक शिक्षा के महत्व को नहीं समझ रहे हैं। सरकारी विद्यालयों में आने वाले बच्चों में एक बड़ी संख्या पहली पीढ़ी की है। अभिभावक मजदूरी या खेती किसानों से जुड़ा है और इस कारण वह विद्यालय में समय नहीं दे पाता।

विद्यालयों की वर्तमान स्थिति की बेहतरी के लिए रचनाधर्मी शिक्षक सदा प्रयत्नशील रहते हैं। उनके रास्ते पर चुनौतियाँ और बाधाएँ आती हैं। मुझे लगता है 'दिवास्वप्न' चुनौतियों से जूझने में सहायक हो सकती है। और तब विद्यालयों का वर्तमान परिदृश्य सकारात्मक, रचनात्मक और बच्चों के लिए आनंदमय हो जाएगा, ऐसा विश्वास है।



(प्रमोद दीक्षित मलव्य)
(लेखक शैक्षिक संवाद मंच
उत्तर प्रदेश के संस्थापक हैं)
(विनायक फीचर्स)

महिला विश्वकप के विजय बनाने में एक प्रमुख भूमिका एवं निभाने वाली (वातावरण) मिताली राज के जन्मदिन पर शुभकामनाएं..

दुनिया में अच्छे क्रिकेटरों की कोई कमी नहीं है लेकिन इसमें खास मुकाम हासिल करने वाले बहुत कम होते हैं। भारतीय पुरुष क्रिकेटरों में हमें कई ऐसे नाम



मिल जाएंगे जिन्होंने खास मुकाम हासिल किए लेकिन भारतीय महिला क्रिकेटरों में ऐसे नाम सिर्फ गिने-चुने ही हैं। इनमें से एक नाम भारतीय महिला क्रिकेट

टीम की सीनियर बल्लेबाज मिताली राज का भी है। मिताली राज ने अपनी कामयाबी की कहानी खुद लिखी है और महिला वनडे क्रिकेट में दुनिया में सबसे ज्यादा रन बनाने वाली पहली महिला क्रिकेटर बनी थीं और अब एक और कामयाबी की इबारत उन्होंने लिख दी। वो दुनिया की पहली ऐसी महिला क्रिकेटर बन गईं जिनके नाम पर 200 वनडे मैच हैं। मिताली राज महिला वनडे क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाली महिला क्रिकेटर हैं। उन्होंने भारत के लिए अब तक कुल 200 वनडे मैच खेले हैं जिसमें उनके नाम पर 6622 रन हैं। वनडे में उनका औसत 51.33 का है और नाबाद 125 रन उनकी सर्वश्रेष्ठ पारी है। वनडे क्रिकेट में उनके नाम पर सात शतक और 52

अर्धशतक है (हमारे एक पुराने रिकॉर्ड के अनुसार)। आज भारतीय महिला क्रिकेट टीम विश्व चैंपियन बनी है। मगर हकीकत में अगर एक गौर किया जाए तो मिताली राज के कप्तानी (एक बार फाइनल में रोमांचक मुकाबले में इंग्लैंड से हारी एवं कई अन्य मौकों पर) और समर्पण ने एक लंबी यात्रा के दौरान भारतीय महिला क्रिकेट (वसुधैव कुटुम्बकम्) को "नया वातावरण" दिया जिसके कारण आज भारत, "वर्ल्ड चैंपियन" हुआ और लड़कियों की क्रिकेट में खेलने की इच्छा बढ़ गई। अतः इसे भुला देना भी न्याय संगत नहीं होगा। जन्म दिन (३ दिसम्बर) पर शुभकामनाएं...

—संजय वर्मा
स्वतंत्र पत्रकार
खेलकूद एवं विज्ञान
(गोरखपुर)



जन्मदिन के साथ मासिक काव्यगोष्ठी हुई सम्पन्न



७ दिसम्बर २०२५ संस्था काव्यसृजन के लिए व उसी तारीख को जन्मी नीतू पाण्डेय क्रांति के लिए खास बन गया। अजब संयोग बना। उसी दिन संस्था की १५०वीं मासिक काव्यगोष्ठी भी आयोजित हुई। श्रीराम जानकी मंदिर बट्टीधाम नब्बे फिट रोड लालबहादुर शास्त्री नगर साकीनाका मुम्बई के प्रांगण में संस्था ने अपनी १५०वीं मासिक काव्यगोष्ठी के साथ स्क्रिप्ट राइटर कवयित्री अभिनेत्री सुश्री नीतू पाण्डेय "क्रांति" का जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ केक काट कर मनाया। इस आयोजन की अध्यक्षता सौ. कुसुम तिवारी जी ने की। और संचालन विधिवत आ. ओमप्रकाश तिवारी जी ने

किया। आ. सदाशिव चतुर्वेदी "मधुर" ने मुख्य आतिथ्य स्वीकार कर आयोजन की गरिमा बढ़ाये। आभार संस्था के कोषाध्यक्ष आ. लालबहादुर यादव "कमल जी" ने प्रकट किया।

इस अविस्मरणीय आयोजन को कवि श्री ओमप्रकाश तिवारी, नीतू पांडे "क्रांति", कुसुम तिवारी "झल्ली", सदाशिव चतुर्वेदी "मधुर", डॉ. प्रमोद पल्लवित, ओमप्रकाश सिंह, शारदा प्रसाद दुबे "शरदचंद्र", "आत्मिक" श्रीधर मिश्र, अभय चौरसिया, माता प्रसाद शर्मा, श्याम तिवारी, लाल बहादुर यादव "कमल", शिवनारायण यादव, प्रा. अंजनी कुमार द्विवेदी "अनमोल", नरेंद्र शर्मा "खामोश" गगन त्रिपाठी आदि ने

काव्यगोष्ठी व जन्मोत्सव को अतुलनीय बना दिया। अध्यक्षीय उद्बोधन में सौ. कुसुम तिवारी जी सभी कवियों तीक्ष्ण समीक्षा की। अपने उद्बोधन में उन्होंने साहित्य में व्याप्त बुराईयों का बड़े दुखी मन से जिक्र करते हुए सभी से निवेदन किया कि साहित्य में यह सब ठीक नहीं है। साहित्य समाज का आइना है। और आइना को हमेशा साफ सुथरा रहना चाहिए। "आत्मिक" श्रीधर मिश्र जी ने अपने विचार मंच से साझा किए। उन्होंने साहित्य समाज में घटित हो रहे विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे। सभी ने स्वादिष्ट नास्ते का आनंद लिया। तदोपरान्त राष्ट्रगान के पश्चात आयोजन सम्पन्न हुआ।

दिव्य ज्ञान

एक छोटी-सी कहानी जो आपकी नियति बदल सकती है: मास्टर सर्वर में संग्रहित गहन ज्ञान मेरे लिए तब तक व्यर्थ है, जब तक मुझे कंप्यूटर चलाना नहीं आता। चाहे मैं भक्ति-भाव से कूड़ेस्क और कंप्यूटर को साफ करूँ, चंदन लगाऊँ, फूल और माला चढ़ाऊँ, अगर बत्तियाँ जलाऊँ, पूजन करूँ और पंचामृत महा-प्रसाद अर्पित करूँ कृपेसा मैं किसी पवित्र स्थान पर मूर्ति के सामने करता हूँ, यह मानकर कि मूर्ति और कंप्यूटर दोनों पाँच महान तत्वों "पंचमहाभूतों" से बने हैं कृतब भी, यदि मुझे कंप्यूटर का सही ज्ञान नहीं है, तो मैं उससे ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता।

"केवल भक्ति सही कौशल का स्थान नहीं ले सकती।"

इसे एक और कहानी से समझिए: गंगा नदी के किनारे एक नन्हा मेंढक पानी में अपनी माँ तक पहुँचने की कोशिश करता है। तेज धूप में वह आगे बढ़ने की कोशिश करता है, परन्तु, नदी किनारे कीचड़ उसे जकड़ लेता है। पानी को छूने से पहले ही वह थक जाता है और तड़प-तड़प कर मर जाता है।

ठीक इस तरह - मनुष्य भी इसी संघर्ष का सामना करता रहता है। हर व्यक्ति दिव्य माँ तक पहुँचना चाहता है, उसी तरह अज्ञानी कंप्यूटर ऑपरेटर या नन्हे मेंढक की तरह। लोग पवित्र स्थलों की यात्रा करते हैं, प्रार्थना करते हैं, और धारणाएं करते हैं। लेकिन वे - समाज, संस्कृति, सरकारी प्रणालियाँ, पुरानी शिक्षा-व्यवस्था, सतही धार्मिक कर्मकांड, अंध-श्रद्धा, अनुचित विश्वास-आस्थाएँ, और अयोग्य गुरुओं की आज्ञा-पालन जैसे भ्रम रूपी कीचड़ में फँस जाते हैं। यही "भ्रम" जैसे चिपचिपे कीचड़ हमें सच्चे ज्ञान "परा-विद्या" तक पहुँचाने नहीं देते।

"पवित्र जल (दिव्य माँ) तक पहुँचने के लिए मेंढक को पथरीले मार्ग पर ठोस आधार चाहिए। बैसे ही, मास्टर सर्वर से ज्ञान प्राप्त करने के लिए सही कंप्यूटर शिक्षा चाहिए।"

इसी प्रकार, उच्च चेतनाकृ-ईश्वर कृतक पहुँचने के लिए हमें सही समझ (विवेक), आत्म-चिंतन, और सच्चे ज्ञान की आवश्यकता है।

आत्म-अनुशासन व्यक्ति को सच्चा दर्शन सिखाता है, और सच्चा दर्शन साधक को स्व-जागरूकता की ओर ले जाता है। यही ईश्वर प्राप्ति है।

नमः शिवाय
आपका मंगल हो।
सनातन

पालघर जिला हिंदी साहित्य समिति ने सजाई कविता एवं गीतों की एक सुरमई साँझ

संवाददाता
पालघर। प्रखर समाजसेवी रामकृष्ण दांडेकर (सुधीर दादा) की अध्यक्षता में पालघर जिला

में डॉ. कुसुम शर्मा (सेवानिवृत्त प्राध्यापिका- विभागाध्यक्ष, सोनोपंत दांडेकर महाविद्यालय, पालघर) उपस्थित रहीं। दीप प्रज्वलन के



हिंदी साहित्य समिति ने दिनांक 6-12-2025 को कविता एवं गीतों से सजी एक शानदार महफिल का आयोजन किया। जिसमें मुख्य अतिथि की भूमिका में नोईग सिटीज़न नीड्स (के. सी. एन. क्लब) के राष्ट्रीय अध्यक्ष नंदन मिश्रा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप

साथ ही कुमारी कृतिका अमित दुबे के सुमधुर कंठ से सरस्वती वंदना के उपरान्त कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सौ. रेणु ललित शुक्ला ने संचालन की बागडोर अपने हाथों में ली और महान साहित्यकार फिराक गोरखपुरी को संचालन के केंद्र में रखते हुए

बड़ी ही कुशलता व उत्साह के साथ उन्होंने अपनी इस जिम्मेदारी को अंजाम तक पहुँचाया। के.सी. एन क्लब की उपशाखा निर्झरिणी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. पवन सिंह की गजलों से कार्यक्रम ने अपनी ऊँचाई को छूना प्रारंभ किया तो उसको आगे बढ़ाते हुए शॉताराम परदेशी, अवधेश विश्वकर्मा, कल्पेश यादव, शेखर तिवारी और स्वयं रेणु शुक्ला ने अपने गीतों से सबका मन मोहा और खूब वाहवाही बटोरी। वीर रस के कवि-पत्रकार संपत उजाला ने अपनी दमदार प्रस्तुति दी। दिग्ग साहब ने माउथ आर्गन बजाकर शोले फिल्म को दर्शकों एवं श्रोताओं के बीच जीवंत कर दिया। सुधाकर मिश्रा ने अपने हास्य से सबको आनंदित कर दिया। कवयित्री इंदु मिश्रा, अमित दुबे ने भी अपनी प्रस्तुति से सभी को लुभाया। एक तरफ जहाँ विद्याधर शुक्ला, योगेश तिवारी, धीरेन्द्र तिवारी, हरिओम शाह, भोलानाथ तिवारी कार्यक्रम के अंत तक बने रहे वहीं दूसरी तरफ जवाहर नवोदय विद्यालय

के वरिष्ठ अध्यापक इंद्र राज यादव व स्पाइडर क्रिकेट अकादमी के संस्थापक-संचालक ललित शुक्ला की उपस्थिति ने कवियों के उत्साह को कम नहीं होने दिया। कार्यक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि विशिष्ट अतिथि सेवानिवृत्त प्राध्यापिका डॉ. कुसुम शर्मा स्वयं को रोक नहीं पाई और उन्होंने अपने संबोधन को रोककर सुमधुर कंठ से एक गीत की प्रस्तुति दी।

मुख्य अतिथि नंदन मिश्रा ने साहित्य की प्रासंगिकता पर बल देते हुए इसे समाज के लिए आवश्यक बताया साथ ही साहित्य में ही समाज को दिशा देने की ताकत है, इस बात को बार-बार रेखांकित भी किया। आज के इस कार्यक्रम में नंदन मिश्रा ने अमित दुबे को के.सी.एन. की साहित्यिक उपशाखा निर्झरिणी का राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष नियुक्त किया। रेणु शुक्ला ने सबका आभार व्यक्त किया एवं रात्रि भोज के निमंत्रण के साथ ही कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की गयी।

ज्ञान सरोवर (हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा
नवभारत प्रेस लि. नवभारत
भवन, प्लॉट नं. 13, सेक्टर-8,
सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई
400706 (एम.एस.) से मुद्रित
तथा 11 गोकुलेश सोसायटी,
पंडित मदन मोहन मालवीय
रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई
400080 (एम.एस.) से
प्रकाशित।

सम्पादक

पूजा प्रसाद पाण्डेय

मो 0-9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित
समाचारों/लेखों में लेखकों तथा
संवाददाताओं के अपने विचार हैं।
किसी भी लेख/समाचार की
जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं
होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
मुम्बई न्यायालय होगा।

सोच अच्छी खबर सच्ची